B.A. Part I
Paper IInd

मुद्रा का अर्थ एवं परिभाषा

(Nature and Definition of Money)

मुद्रा के अर्थ और प्रकृति के सम्बन्ध में बहुत मतभेद और भ्रान्ति चली आ रही है। जैसा कि स्किटोस्की ने लक्ष्य किया है, "मुद्रा की धारणा को परिभाषित करना कठिन है, आंशिक आंशिक रूप से तो इसलिए कि यह एक नहीं तीन कार्य करती है, जिनमें से प्रत्येक कार्य मुद्रात्व की कसौटी प्रदान करता है। ये कार्य हैं: (i) लेखा की इकाई, (ii) विनिमय का माध्यम और (iii) मूल्य का संचय"। यद्यपि स्किटोस्की ने मुद्रात्व (moneyness) के कारण मुद्रा को परिभाषित करने की कठिनाई की ओर संकेत किया है तथापि उसने मुद्रा की व्यापक परिभाषा दी है। प्रो० कोलबोर्न (Coulborn) की परिभाषा के अनुसार मुद्रा मूल्यांकन तथा भुगतान का माध्यम है; लेखा की इकाई के रूप में भी तथा विनिमय के सामान्यतः स्वीकार्य माध्यम के रूप में भी।" (Money is the means of valuation and of payment; as both the unit of account and generally acceptable medium of exchange). कोलबोर्न की परिभाषा बहुत व्यापक है। उसने इस परिभाषा में 'मूर्त' मुद्रा (concrete money) जैसे – सोना, चैक, सिक्के, करेन्सी नोट, बैंक ड्राफ्ट आदि को तो शामिल किया ही है, साथ ही अमूर्त मुद्रा (abstract money) को भी ले लिया है जो हमारे मूल्य, कीमत तथा योग्यता के विचारों की वाहिका है। इस तरह की व्यापक परिभाषाएं देखकर सर जॉन हिक्स ने कहा था, "मुद्रा अपने कार्यों से परिभाषित होती है, जिस किसी वस्तु को मुद्रा की भांति प्रयोग किया जाए वही मुद्रा बन जाती है। मुद्रा वही है जो मुद्रा का काम करे।" (Money is defined by its functions: anything is money which is used as money; 'money is what money does') ये मुद्रा की कार्यात्मक परिभाषाएं हैं क्योंकि ये मुद्रा को उसके कार्यों की दृष्टि से परिभाषित करती हैं।

कुछ अर्थशास्त्री मुद्रा को कानून की शब्दावली में परिभाषित करते हैं और कहते हैं, "जिस किसी चीज को सरकार मुद्रा घोषित कर दे, वही मुद्रा है।" इस तरह की मुद्रा को सामान्यरूप से सभी स्वीकार करते हैं।

और इसमें ऋण चुकाने की कानूनी शक्ति है होती है। परन्तु हो सकता है कि लोग वैध मुद्रा स्वीकार न करें और उसके बदले में वस्तुएं तथा सेवाएँ बेचने को तैयार न हों। दूसरी ओर संभव है कि लोग ऐसी चीजों को मुद्रा के रूप में स्वीकार कर लें जिन्हे ऋण चुकाने के लिए कानूनी तौर पर मुद्रा नहीं कहा गया, परन्तु जो खूब प्रचलित हों। इस तरह की चीजें, कमर्शियल बैंकों द्वारा जारी किए गए चैक और नोट हैं। इस प्रकार, वैधता के अतिरिक्त भी कुछ ऐसी बातें हैं जो कुछ चीजों को मुद्रा बनाती हैं।